B.A Part II Political Science (Hons) Paper IIIrd.

Topic :- मत व्यवहार voting behaviour

लोकतंत्र में जानकार नागरिक का होना आवश्यक है वर्तमान उदारवादी परिप्रेक्ष्य में लोकतंत्र सर्वाधिक वैधता प्राप्त करने वाली शासन प्रणाली के रूप में स्वीकार किया जा चुका है लोकतंत्र की वास्तविक क्षमता और सशक्तता नागरिकों की सहभागिता और सचेतना पर निर्भर है। एक मतदाता के रूप में नागरिक राजनीतिक सहभागिता उसके राजनीतिक सचेतना के स्तर के अनुरूप होती है क्योंकि मतदाता एक राजनीतिक प्राणी है राजनीतिक सहभागिता निभाते समय वह विभिन्न कारकों से प्रभावित होता है यह कारक न केवल मतदाता को अभिप्रेरित करता है बल्कि प्रजातांत्रिक व्यवस्था को चलायमान भी बनाते हैं ऐसे में इन कारकों का अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है voters ऐसे ही विभिन्न कारकों से प्रभावित होकर अपना राजनीतिक व्यवहार निर्धारित करता है तो मतदाता के इस व्यवहार को मतदान व्यवहार कहा जाता है।

मत व्यवहार को समझने के लिए इसका अर्थ जानना आवश्यक है - voting behaviour का आशय यह है कि मतदाता अपने मताधिकार के प्रयोग में किन तत्वों से प्रभावित होता है मतदान - व्यवहार में सर्वप्रथम तो यह अध्ययन किया जाता है कि कौन कौन से तत्व व्यक्ति को मताधिकार का प्रयोग करने के लिए प्रेरित और कौन-2 से तत्व उसे इस सम्बन्ध में निरुत्साहित करते हैं द्वितीय स्तर पर इस बात का अध्ययन किया जाता है कि किन तत्वों से प्रभावित होकर व्यक्ति एक विशेष उम्मीदवार और एक विशेष राजनीतिक दल के पक्ष में अपने मताधिकार का प्रयोग करते हैं। इस दृष्टि से मतदान व्यवहार का अध्ययन चुनाव के पूर्व भी किया जाता है और चुनाव के बाद भी।

प्रत्येक प्रजातांत्रिक राज्य में व्यस्कों को चुनावों में वोट डालने का अधिकार प्राप्त होता है वे बिना किसी जाति धर्म, रंग, लिंग के भेदभाव के इस अधिकार का प्रयोग करते हैं इस vote डालने की प्रक्रिया को ही मतदान व्यवहार कहा जाता है लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में नागरिक एक निश्चित अवधि के लिए अपने प्रतिनिधियों को चुनते हैं ये प्रतिनिधि नागरिकों की

classmate
Date
Page

की भावना के अनुसार देश का शासन चलाते हैं इन प्रतिनिधियों को :2:
चुनने का अधिकार नागरिकों का मताधिकार कहलाता है।

सामान्यतः मतदान व्यवहार का अर्थ यह माना जाता है कि मतदाता मताधिकार का प्रयोग करते समय किन भावनाओं से प्रेरित होता है एवं मतदान करते समय उसके मस्तिष्क में किन-किन बातों का प्रभाव अंकित होता है। कतिपय विचारकों ने मतदान व्यवहार को राजनीति में भाग लेने का माध्यम माना है। इसि क्रो अधिकार को आधार मानते हुए उनके विचारों को निम्नलिखित परिभाषाओं के रूप में बताया गया है- पॉल० एप० एपल० बी० के अनुसार मतदान व्यवहार व्यक्तियों का सरकार से सीधा संबंध है।

कार्ल. जे. फ्रेड्रिक के अनुसार यह प्रजातांत्रिक शासन को वैधता प्रदान करने की प्रक्रिया में एक समस्या है। अर्थात मतदान करते समय व्यक्ति सरकार को कार्य करने के लिए वैधता प्रदान करता है।

गेब्रियल ए० आमण्ड के अनुसार यह राजनैतिक उद्देश्य की ओर निश्चित राजनैतिक अनुज्ञापन है, जैसे नेतृत्व, नीतियाँ एवं मुद्दे इत्यादि। यह एक विशिष्ट प्रकार की राजनैतिक संस्कृति जैसे संक्रमण-कालीन में निहित भूमिका को प्रदर्शित करता है।

चुनाव एवं निर्वाचकीय प्रक्रिया से संबंधित महत्वपूर्ण पहलू है- मतदान व्यवहार। डोनाल्ड ई. स्टोक्स के अनुसार मतदान व्यक्तिगत प्राथमिकताओं को सामूहिक निर्णयों में समाहार करने का एक साधन है।

जनतंत्र में सत्ता निर्वाचित होती है। मतदाता व्यक्तियों और दलों का चुनाव करता है। अपनी सोच के आधार पर यह तय करता है कि किन विचारधाराओं के लोग या दल उसके भविष्य को बेहतर बना सकते हैं। कुल मिलाकर जनतंत्र में मतदाता का सामूहिक विवेक अपने विकास की दिशा निर्धारित करता है।

Factors influencing voting behaviour :-

मतदान व्यवहार के निम्न तत्व है जैसे- सर्वप्रथम मतदान में भाग लेने वाले लोगों का अनुपात जनसंख्यात्मक लक्षणों और सामाजिक-आर्थिक पद के अनुसार बदलता रहता है मतदान में भाग लेने की प्रवृत्ति स्त्रियों में पुरुषों से अधिक, निरक्षरों में साक्षरों से अधिक तथा सामाजिक दृष्टि से उन्नत वर्गों की तुलना में अधिक होती है। मतदान में भाग न लेने की प्रवृत्ति उनमें भी

होती है जिन्हें राजनीतिक सूचना कम प्राप्त है अथवा जिनपर संचार के साधनों और अन्य दबावों का प्रभाव कम है मतदान में भाग लेने वाले व्यक्ति सामान्यता निम्न तत्वों से प्रेरणा लेते हैं-

1 जातिवाद :- जातिवाद मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख तत्व रहा है वैसे तो इस तत्व का प्रभाव भारतीय संघ के सभी राज्यों में है, लेकिन बिहार और प्रदेश हरियाणा, पंजाब, राजस्थान और केरल में इस प्रभाव का असर अधिक दिखता है भारतीय मतदाता जातिवाद में इतना गतवाले हो कर मतदान व्यवहार पर असर डालते हैं कि चुनाव से पहले ही अपनी जाति का मुख्य मंत्री या मुख्य पद तय कर लेते हैं। इस संबंध में एक महत्वपूर्ण और आशावर्द्धक तत्व यह है कि यदि चुनाव के अन्तर्गत कम-2 कोई महत्वपूर्ण प्रश्न या विशेष समस्या सामने हो तो फिर जाति के तत्व का प्रभाव बहुत कम हो जाता है For example - 1971, 1977 का लोकसभा चुनाव

2. क्षेत्रवाद की प्रवृत्ति :- भारत के कुछ क्षेत्रों में क्षेत्रवाद काफी प्रबल भी प्रबल है। पंजाब में अकाली दल, तमिलनाडु में DMK, ADMK की सफलता यही क्षेत्रवादी प्रवृत्ति को बढ़ावा देती है पश्चिमबंगाल और केरल आदि राज्यों में कुछ क्षेत्रीय दलों की सफलता का कारण यही है।

3- धर्म :- धर्म हम भारतीयों के धमनियों में रक्त के साथ प्रभावित होता रहता है देश की राजनीति में धर्म की जड़े बहुत गहरी है परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि निर्वाचन में जनप्रतिनिधि धर्मों के ही अनुपात में प्राप्त हो वैसे तो भारत एक धर्म निरपेक्ष देश है यहाँ किसी भी धर्म को राजधर्म स्वीकार नहीं किया गया है निर्वाचन में जहाँ प्रत्याशि केवल हिन्दू ही होते हैं वहाँ कि मुसलमान जनता अपनी रुचि के हिन्दू को मत देती है इसि प्रकार जिन निर्वाचन क्षेत्रों में प्रत्याशि केवल मुसलमान होते हैं वहाँ की हिन्दू जनता अपनी रुचि के मुसलमान प्रतिनिधि को मतदान करती है

भारत में अधिकांश राजनीतिक दल और उनके नेता चुनावों में धर्म और सम्प्रदाय की दलीलों के आधार पर वोट माँगते हैं vote मांगने के लिए मठाधिशों, मुल्लाओं, पादरियों, और साधुओं के साथ साँठ-गाँठ की जाती है मतदान के अवसरों पर मत मांगने वाले मतदान करने वालों के आचरण पर धार्मिक तत्व छाये रहते है सही मायनों में कहा जा सकता है 2014 और 2019 का लोकसभा चुनाव

में इसका असर मतदान व्यवहार में अधिक देखने को मिला है।

4. भाषा – यह तत्व भी भारत में मतदान-व्यवहार को प्रभावित करता रहा है क्षेत्रवाद और भाषा के सवालों में भारतीय राजनीति के इतने ज्वलंत प्रश्न रहे हैं और भारत के हाल की राजनीतिक इतिहास की घटनाओं के साथ इनका इतना गहरा संबंध रहा है कि अक्सर ऐसा लगता है कि यह राष्ट्रीय एकता की सम्पूर्ण समस्या है। 1967 और 1971 ई० के चुनावों में D.M.K ने हिन्दी विरोध के नाम पर समर्थन प्राप्त किया साथ ही 1977 ई० कि लोकसभा चुनावों में दक्षिण भारत में जनता पार्टी की असफलता का एक बड़ा कारण यह रहा कि दक्षिण भारत में व्यक्ति अबतक जनता पार्टी की भाषा-नीति के सम्बन्ध में पूर्णतया आश्वस्त नहीं थे।

5. दलों की विचारधारा, कार्यक्रम और नीति – भारतीय मतदाता यद्यपि बहुत अधिक नहीं, लेकिन कुछ सिमा तक दलों की विचार धारा, कार्यक्रम और नीति से भी प्रभावित होते हैं। इस संबंध में उनके द्वारा निषेधात्मक विचारधारा और कार्यक्रम के स्थान पर सकारात्मक विचारधारा और कार्यक्रम को पसन्द किया जाता है

6. राजनीतिक स्थिरता और केन्द्र में सुदृढ़ सरकार की आकांक्षा – भारतीय मतदाता को यह तत्व भी काफि प्रभावित करता है मतदान व्यवहार में।

7. आर्थिक स्थिति – व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति भी मतदान-व्यवहार को प्रभावित करती है ऐसा देखा जाता है कि यदि व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति अच्छी हो तो मतदाता शासक दल के पक्ष में मतदान करते हैं अन्यथा शासक दल के विरुद्ध।

मतदान-व्यवहार के अध्ययन में कठिनाईयाँ – मतदान मनोवैज्ञानिक तत्वों से प्रेरित एक गूढ़ राजनीतिक प्रक्रिया है, जो अनेक आन्तरिक और बाहरी तत्वों से प्रभावित होती है स्वाभाविक रूप से, मतदान-व्यवहार के अध्ययन में अनेक कठिनाईयाँ आती हैं जैसे-एक क्षेत्र का मतदान-व्यवहार दूसरे क्षेत्र के मतदान-व्यवहार से भिन्न होता है। भारत जैसे विविधता वाले देश में केवल कुछ निश्चित शीर्षकों के अन्तर्गत सम्पूर्ण देश के मतदान-व्यवहार का अध्ययन नहीं किया जा सकता अतः यह कठिनाई आती है कि किन क्षेत्रों का अध्ययन किया जाए और किन शीर्षकों के अन्तर्गत यह अध्ययन किया जाए। सबसे प्रमुख कठिनाई यह है कि जिन व्यक्तियों का साक्षात्कार किया जाता है वे सही उत्तर नहीं दे पाते जबकि वे सही उत्तर देने की क्षमता रखते हैं जान बूझ कर वे ऐसा करते हैं उन्हें डर रहता है साक्षात्कार करने वाला या तो किसि पार्टि विशेष का है या शासन का।